Subject :- Sociology Date :- 11/05/2020
Class :- D-I (H) Paper :- 2nd ①
Topic :- पैरेटो के अभिजात वर्ग के परिभ्रमण का सिद्धान्त
By :- Dr. Shyamanand Choudhary Guest Teacher
Marwari College, Darbhanga, 9507941619
विषय-प्रवेश
Online Study Material No :- (74)

V. Pareto के अनुसार, समाज में दो वर्ग उच्च तथा निम्न वर्ग पाए जाते हैं। उच्च वर्ग के पास शक्ति अथवा सत्ता होती है। जिसके बल पर प्रभुत्व जमाये रहते हैं। उच्च वर्ग में कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो शिक्षित, बुद्धिमान तथा समर्थ होते हैं। समाज के ऊपर प्रायः इन्ही लोगों का अधिक प्रभाव रहता है। अपने गुणों के बल पर ये उच्च लोग सामाजिक संस्तरण में उच्च आसन ग्रहण करते हैं। पैरेटो ने इसी वर्ग को अभिजात वर्ग कहा है।

पारसन्स ने पैरेटो के सामाजिक संस्तरण को स्पष्ट करते हुये कहा है कि- "इस उद्देश्य के लिए वह समाज को उच्च वर्ग और निम्न वर्ग इन दो वर्गों में विभाजित करने के अतिरिक्त कुछ नही करता। उच्च वर्ग में सामान्यतः वे लोग होते हैं, जिसमें सामान्य जनता की अपेक्षा किसी विशेष गुण की प्रधानता होती है और सदैव अल्पमत में होते हैं।"

Pareto ने अभिजात वर्गों को दो भागों में बाँटा है :-

(अ) शासकीय अभिजात वर्ग :- इस श्रेणी में वे अभिजात आते हैं जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सरकार के प्रशासन सम्बन्धी कार्यों में भाग लेते हैं, अथवा सरकारी कार्यों के निर्देशन में महत्वपूर्ण प्रभाव डाला करते हैं।

(ब) अशासकीय अभिजात वर्ग :- इस वर्ग में ये अभिजात आते हैं जो शासन में तो भाग नही लेते, उनकी स्थिति अन्य गुणों के आधार पर पर्याप्त ऊँची व सम्मानित होती है, जैसे :- वैज्ञानिक, कलाकार, शिक्षाशास्त्री, अर्थशास्त्री आदि।

Pareto के अनुसार इस अभिजात वर्ग के अन्तर्गत निरंतर ऊपर-नीचे आने जाने की एक प्रक्रिया चलती है। इस प्रक्रिया को ही पैरेटो ने अभिजात वर्ग का परिभ्रमण (Circulation of elites) कहा है। अपने जीवन में प्राप्त सफलता अथवा असफलता के अनुसार निम्न वर्ग के व्यक्ति उच्च वर्ग में आ सकते हैं तथा उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग में आ सकते हैं। प्रत्येक समाज में इस परिभ्रमण की गति एक समान नही होती है

(2)

परन्तु परिभ्रमण की प्रक्रिया प्रत्येक समाज में अवश्य होती है क्योंकि कोई भी वर्ग पूर्णतया बन्द वर्ग नहीं हो सकता है। वास्तविकता यह है कि प्रत्येक समाज में अभिजात वर्ग के परिभ्रमण की प्रक्रिया सामान्य अथवा तेज गति से अवश्य ही चलती रहती है। संक्षेप में, अभिजातों के परिभ्रमण की गति की तीव्रता एक समाज से दूसरे समाज तथा एक समय से दूसरे समय के अनुसार भिन्न-भिन्न होती है।

Wilfredo Pareto के अनुसार वर्ग परिभ्रमण के निम्नांकित कारण हैं:-

1. किसी भी समाज में पूरी तरह बन्द वर्गों का निर्माण नहीं होता है। वर्ग में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। वर्गों के पूर्णतः बन्द न होने के कारण परिभ्रमण होता है।
2. पैरेटो का मानना है कि अभिजात वर्गों के हाथ में सत्ता आने से वे भ्रष्ट हो जाते हैं तथा उनका पतन होने लगता है। इसके परिणाम स्वरूप उनका प्रभुत्व समाज में कम होने लगता है।
3. निम्न वर्ग के व्यक्तियों में भी कुछ व्यक्ति विशिष्ट गुणों से परिपूर्ण होते हैं। व्यक्ति निरन्तर ऊपर की ओर बढ़ते जाते हैं।
4. अभिजात वर्ग के सदस्यों की संख्या में निरन्तर कमी होती रहती है। इसके कारण भी अभिजात वर्ग का पतन होता है। पैरेटो का कहना है कि आज जर्मनी में जो अभिजात वर्ग के व्यक्ति हैं वे पुराने जमाने में अभिजातों का सेवक थे। इसलिए पैरेटो ने लिखा है कि "इतिहास कुलीनतंत्रों का कब्रिस्तान है।"

Wilfredo Pareto के अनुसार अभिजात वर्ग के निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:-

(A) विशेष गुण:- समाज में कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जिसमें बुद्धिकुशलता तथा अनेक चारित्रिक गुण विद्यमान होते हैं। इसके विपरीत लोगों में इन गुणों का अभाव रहता है। पैरेटो ने समाज को अभिजात तथा अभिजात दो वर्गों में विभाजित किया है। अभिजात वर्ग की जनता की भावनाओं को प्रभावित करते हैं। इसके विपरीत अभिजात वर्ग में इन गुणों की कमी होती है।

(B) गुणों के आधार पर परिभ्रमण:- अभिजात वर्ग में परिभ्रमण का क्रम निरन्तर चलता रहता है जो गुणों पर आधारित होता है। विशिष्ट गुणों तथा चारित्रिक विशेषताओं को प्राप्त करके लोग अभिजात वर्ग में शामिल हो सकते हैं। इसके विपरित इन गुणों को खो देते हैं। वे अभिजात वर्ग से बाहर चले जाते हैं।

(C) ऊपर तथा नीचे के क्रम:- प्रत्येक समाज में उच्च और निम्न दो

Scanned with CamScanner

वर्ग पाए जाते हैं। निम्न वर्ग के लोग भी विशिष्ट गुणों को प्राप्त करके उच्च वर्ग में आ जाते हैं और उच्च वर्ग के लोग भी जब अपने विशिष्ट गुणों को खो देते हैं तो निम्न वर्ग में चले जाते हैं।

V. Pareto ने अभिजात वर्ग के परिभ्रमण को इस प्रकार स्पष्ट किया जो वर्ग सामाजिक संरचना में ऊपरी भाग में होता है, वह कालान्तर में भ्रष्ट हो जाने के कारण अपने गुणों को खोकर निम्न वर्ग में आ जाते हैं। दूसरी ओर उन रिक्त स्थानों को भरने के लिए निम्न वर्ग में जो बुद्धिमान, कुशल, चरित्रवान तथा योग्य होते हैं, वे नीचे से ऊपर की ओर आते रहते हैं। इस प्रकार उच्च वर्ग से निम्न वर्ग तथा निम्न वर्ग से उच्च वर्ग आने की प्रक्रिया सदैव चलती रहती है। इसी चक्रीय गति के कारण सामाजिक ढाँचा परिवर्तित हो जाता है। सामाजिक परिवर्तन के चक्र के तीन पक्ष प्रमुख हैं – राजनीतिक, आर्थिक तथा आदर्शात्मक। चक्रीय परिवर्तन राजनीतिक क्षेत्र में उस समय गतिशील होता है, जब शासन सत्ता उस वर्ग के हाथ में आ जाती है, जिनमें समूह के स्थायित्व के विशेष चालक अधिक शक्तिशाली होते हैं, इन्हे शेर कहा जाता है।

आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन को दर्शाने के लिए पैरेटो ने हमारा ध्यान सट्टेबाज तथा निश्चित आय वाले वर्ग की ओर आकृष्ट किया है। सट्टेबाज वर्ग के लोगों की आय अनिश्चित होती है। इस वर्ग के लोग अपनी बुद्धि के बल पर आय प्राप्त करते हैं। इसके विपरीत दूसरे की आय निश्चित होती है। क्योंकि वह सट्टेबाजी की भाँति अनुमान पर आधारित नही है। सट्टेबाज वर्ग के लोग उद्योगकर्ता अथवा कुशल व्यावसायि होते हैं। यह वर्ग अपने आर्थिक हित साधन के लोभ में चालाकी और भ्रष्टाचार का स्वयं शिकार हो जाते हैं। तथा अपने पतन का मार्ग स्वयं प्रशस्त कर देता है। इसके विपरीत निश्चित आय वाले वर्ग के लोग धीरे-धीरे प्रगति करके उच्च वर्ग में शामिल हो जाते हैं। किसी प्रकार आदर्शात्मक क्षेत्र में विश्वास और अविश्वास क्रम चलता रहता है। किसी समय विशेष में विश्वासघातियों का सामाजिक व्यवस्था पर प्रभुत्व रहता है परन्तु वे अपनी हठता तथा रूढिवादिता के कारण अपने पतन का मार्ग स्वयं प्रशस्त कर लेते हैं तथा उनका स्थान दूसरे वर्ग के लोग ले लेते हैं।

अभिजात वर्ग के परिभ्रमण का ज्वलंत उदाहरण –

Scanned with CamScanner

(4)

भारतीय जाति प्रथा है। प्राचीन काल में समाज में ब्राह्मणों की स्थिति सर्वोपरी थी और अनुसूचित जाति की स्थिति अत्यंत निम्न थी। किन्तु आज हरिजन (अनुसूचित जाति) वर्ग का व्यक्ति प्रशासनिक सेवा, विधानसभा, लोकसभा, उच्च शिक्षा में आने के लिए सुरक्षित है। इसके विपरीत आज समाज में ब्राह्मणों का प्रभुत्व काफी कम हो गया है।

S.N. Choudhary
Marwari college
L.N.M.U

Scanned with CamScanner